5BYR6U

पाठ–9

श्रम के आरती

– भगवती लाल सेन

हमन मिहनत करइया मनखे अन। हमला कोनो ले डर्राय के बात नइहे। हमन ये पाय के मिहनत करथन ताकि संसार ल सुख मिलय। ये कविता म छत्तीसगढ़िया मन के इही भाव ल बताय गे हे।

पाठ ले हम सीखबोन– छत्तीसगढ़ी के नवा शब्द अउ हिन्दी म ओकर अरथ। छत्तीसगढ़ी हाना ओकर अर्थ अउ प्रयोग।

काबर डर्राबोन कोनो ल, जब असल पसीना गारत हन।
हम नवा सुरुज परघाए बर, श्रम के आरती उतारत हन।
चाहे कोनों हाँसे–थूँके, रद्दा के काँटा चतवारत हन।
हम नवा सुरुज परघाए बर, श्रम के आरती उतारत हन।।
कल अउ कारखाना जतका, मिल मा पोंगा बाजत हावय।
रोज कहत हें हाँक पार के, जांगर वाला जागत हावय।

दुनिया के सुख बर दुख सहिके, पथरा ले तेल निकारत हन।
हम नवा सुरुज परघाए बर, श्रम के आरती उतारत हन।।
सोना कस तन, बूता के धुन मा, माटी कस करिया जाथे।
नांगर जब गड़थे, भुइयाँ के कोरा हाँसत हरिया जाथे।
सुस्ता के अमरित–कुंड आज हम, गजब जतन ले झारत हन।
हम नवा सुरुज परघाए बर, श्रम के आरती उतारत हन।।

शिक्षण–संकेतः– पाठ ल पढ़ाय के पहिली छत्तीसगढ़ के जन–जीवन उपर चरचा करँय। मजदूर अउ किसान मन के महिनत के महत्तम बतावत लइका मन ल पाठ ले जोड़ँय। कविता ल लय के साथ गावँय अउ लइका मन ल दुहराय बर कहँय, तेकर पाछू भाव–बोध करावँय।

नइ थकिस कभू चंदा–सुरुज, दिन–रात रथे आगू–पाछू।
रहिथे करनी के नाँव अमर, नइ रहय भरम के बहिरासू।
जम्मो मनखे बर एक नीत, सुनता–मसाल हम बारत हन।
हम नवा सुरुज परघाए बर, श्रम के आरती उतारत हन।।

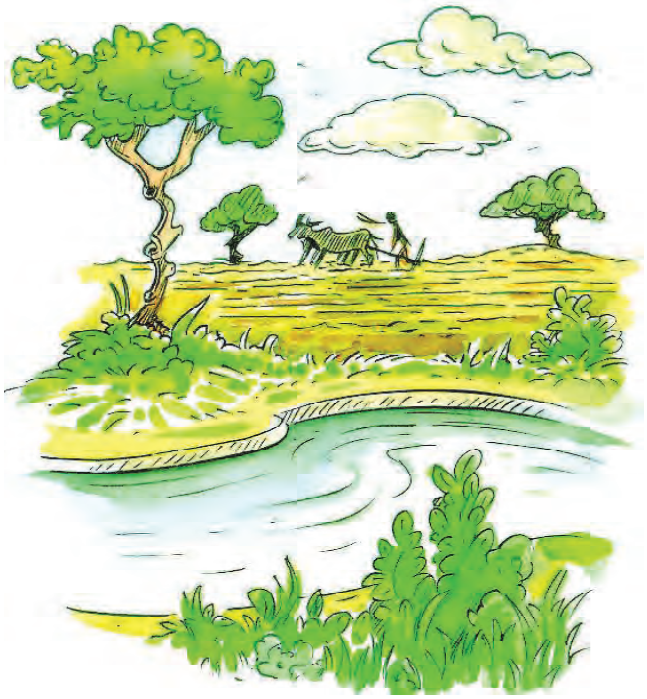

कठिन शब्द मन के हिन्दी अरथ

काबर	–	क्यों	डर्राबोन	–	डरेंगे
कोनों	–	किसी, कोई	जम्मो	–	सब कुछ
चतवारत	–	साफ करना	करिया	–	काला
जतका	–	जितना	पोंगा	–	भोंपू
जागत	–	सचेत	कस	–	जैसे
बूता	–	काम	अस	–	ऐसे
नांगर	–	हल	भुइयाँ	–	जमीन
जतन	–	युक्ति	गजब	–	बहुत
झारत	–	निकालना	भरम	–	भ्रम
परघाए बर	–	अगवानी करने के लिए			
कल	–	मशीन, बीते/आनेवाला दिन			

कविता का भावार्थ

हम किसी से क्यों डरेंगे? हम अपने सुखद भविष्य के लिए कठोर परिश्रम कर पसीना बहा रहे हैं। चाहे कोई हमारी हँसी उड़ाए, हम रास्ते की रुकावटों–बाधाओं को दूर करने में लगे हुए हैं। कल–कारखानों से आनेवाली भोंपू की आवाज हमें जागने एवं परिश्रम करने का संदेश दे रही है। हम कठिन परिश्रम इसलिए कर रहे हैं ताकि संसार को सुख मिले। खेतों में निरंतर कार्य करने के कारण हमारा सुंदर शरीर काला पड़ गया है किन्तु हमें इसकी चिंता नहीं है। हमारी मेहनत का ही नतीजा है कि धरती पर हरियाली है और भरपूर अन्न का उत्पादन हो रहा है। आज हम अपने इसी परिश्रम के फलस्वरूप प्राप्त खुशहाली का आनंद ले रहे हैं। हम देख रहे हैं कि सूर्य और चंद्रमा बिना थके निरंतर अपने रास्ते पर चलते रहते हैं और उजियाला फैलाते रहते हैं। सचमुच संसार में अच्छे कार्य करनेवालों का ही नाम अमर होता है, इसमें किसी प्रकार का कोई भ्रम नहीं है। हम छत्तीसगढ़वासी चाहते हैं कि सभी मनुष्य एक नीति के मार्ग पर चलें इसीलिए हम सलाह–मशवरा कर एकता रूपी मशाल जला रहे हैं।

प्रश्न अउ अभ्यास

गतिविधि

. शिक्षक लइका मन ल दू दल म बाँट के एक–दूसर ले मुँहअँखरा प्रश्न पूछय ल कहँय। प्रश्न अइसन हो सकत हें–

क. 'श्रम के आरती' कविता के कवि के नाव बतावव।

ख. हमला कोनो ले काबर नइ डरना चाही ?

ग. छत्तीसगढ़वासी मन श्रम के आरती काबर उतारत हें ?

बोधप्रश्न

प्रश्न 1.खाल्हे लिखाय प्रश्न मन के उत्तर लिखव–

क. 'श्रम के आरती उतारत हन' के का अर्थ हे ?

ख. मिल के पोंगा ह हाँक पार के का कहत हे ?

ग. दुनिया ल सुखी बनाय बर छत्तीसगढ़ के मनखे मन का करत हे ?

घ. भुइयाँ कइसे हरिया जाथे ?

ङ. कवि के अनुसार काकर नाव अमर हो जाथे ?

प्रश्न 2.ये पंक्ति मन के अरथ स्पष्ट करव–

क. कल अउर कारखाना जतका, मिल मा पोंगा बाजत हावय।
रोज कहत हें हाँक पार के, जाँगर वाला जागत हावय।।

ख. सोना कस तन, बूता के धुन मा, माटी कस करिया जाथे।
नांगर जब गड़थे, भुइयाँ के कोरा हाँसत हरिया जाथे।।

ग. नइ थकिस कभू चन्दा–सुरूज, दिन–रात रथे आगू–पाछू।
रहिथे करनी के नाँव अमर, नइ रहय भरम के बहिरासू।।

प्रश्न 3. खाल्हे लिखाय भाव कविता के जेन पंक्ति में आय हे, ओ पंक्ति ल छाँट के लिखव–

क. संसार के सुख के खातिर हमन दुख सहिके कड़ा महिनत करत हन।

ख. हमन अमरित कुंड ले बड़ जतन करके अमरित निकालत हन।

ग. जम्मो मनखे बर एक नीत बने, ये सोचके हमन सुनता के मसाल बारत हन।

भाषातत्व अउ व्याकरण

प्रश्न 1. खाल्हे लिखाय मुहावरा मन के अरथ लिखव–

श्रम के आरती, पसीना–गारना, पथरा ले तेल निकालना, जाँगरवाला, भरम के बहिरासू, सुनता–मसाल।

प्रश्न 2. खड़ी बोली म समान अरथ वाला शब्द लिखव–

सुरुज, अउर, पथरा, माटी, करिया, भुइयाँ, अमरित, मनखे, जतन, गुनवान, अवगुन, नीत, नाव।

प्रश्न 3. पाठ म आय अइसन शब्द मन ल छाँट के लिखव जेकर उल्टा अर्थ वाला शब्द घलो कविता म आय हे, जइसे– सुख–दुख।

योग्यता विस्तार

- छत्तीसगढ़ के कोनो कवि के कोई कविता या गीत खोज के लिखव अउ याद करव।

गतिविधि

क. कक्षा म कोई छत्तीसगढ़ी लोकगीत सुनावव।

ख. शिक्षक कक्षा ल दू दल म बाँट देवँय। दूनों दल के लइका मन एक–दूसर ले ''जनउला'' पूछे के खेल खेलँय।

5C8M8H